Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.02, September,2023
http://www.knowledgeableresearch.com/

पाण्डुलिपि साहित्य के विकास में कश्मीर राज्य की भूमिका

शिखारानी

शोध छात्रा,पीएच.डी. (संस्कृत)
संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।
Email: Shikharani787@yahoo.com

****

शोधसार

पाण्डुलिपि शब्द पाण्डु तथा लिपि दो शब्दो से मिलकर बना है पाण्डु का अर्थ है पीला या सफेद तथा लिपि शब्द संस्कृत के लिप् धातु से इ प्रत्यय लगाकर निष्पन्न है पाणिनि ने इसका धातुपाठ इस प्रकार किया है।

लिप्तिः (लिप + क्तिन्) लेप: (लिप् + घञ्) लेपनम् (लिप+ल्युट्) लेपकः (लिप+ण्बुल) लेप्ता अथवा लेपयिता (लिप+तृच+णिच्) आदि।

जो रचनाकार अपने हाथ से लिखता है वही 'पाण्डुलिपि' है। इसे हसतलिखित पोथी, ग्रन्थ अथवा ग्रन्थि भी कहते हैं | कुछ विद्वान् इसे मातृका(हस्तलिखित) तो कुछ इसको 'मनुस्क्रिप्ट' भी कहते है | स्क्रिप्ट का अर्थ है –खुरचना | अध्ययन -अध्यापन की इस श्रृंखला में पाण्डुलिपि विज्ञान के क्षेत्र में भारत के अन्य प्रदेशों के साथ-साथ कश्मीर प्रदेश की भूमिका पुराकाल से रही है। कश्मीर प्रदेश की प्रमुख पाण्डुलिपियों का वर्णन इस शोधपत्र में किया गया हैं |

की-वर्ड : पाण्डुलिपि विज्ञान और कश्मीर प्रदेश की पाण्डुलिपियाँ |

****

संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रन्थ रत्नों का सागर है। इस भाषा में साहित्य, कला विज्ञान, ज्योतिष गणित, अर्थशास्त्र, इतिहास इत्यादि आते है।[1] हिमालय से लेकर कन्याकुमारी के छोर तक किसी-न-किसी रूप में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन में होता रहा है।

[1]पाण्डुलिपि विज्ञान, सम्पादिका- डॉ0 वेद कुमारी घई, प्रकाशक एवं वितरक विश्व संग्रह प्रतिष्ठान 173 रघुनाथ जम्मू, संस्करण 1980 ई.

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

अध्ययन -अध्यापन की इस श्रृंखला में पाण्डुलिपि विज्ञान के क्षेत्र में भारत के अन्य प्रदेशों के साथ-ही-साथ कश्मीर प्रदेश की भूमिका पुराकाल से महत्त्वपूर्ण रही है। संस्कृत साहित्य का प्रकाशित साहित्य ही इतना विपुल है कि इतिहास में उसे पूर्णतया समाविष्ट करना कठिन है**,** अप्रकाशित साहित्य की तो बात ही नहीं करनी चाहिए | फिर भी साहित्य दर्शन इस बात पर बल देता है कि पाण्डुलिपि के रूप में भी इतिहास की बहुमूल्य और महत्वपूर्ण सामग्री रहती है। जिसकी उपेक्षा साहित्यकार को नहीं करनी चाहिए। वैसे तो पाण्डुलिपि विज्ञान आधुनिक शैक्षेणिक विषय में गिना जाता है। परन्तु सत्य तो है कि भारत में प्राचीन प्रचलित विद्याओं में इसकी गणना होती रही है। पाण्डुलिपि पहले प्राचीन ग्रन्थागारों में, मठों -मन्दिरों के ग्रन्थागारों अथवा विद्याविलासी विद्वानों एवं संतों के घरों में सुरक्षित रही है।[2] बाद में अंग्रेजी विद्वानों तथा भारतीय विद्वानों ने इन्हें खोजकर एकजुट होकर इस पर कार्य किया तथा राजकीय पाण्डुलिपि संग्रहालय स्थापित किये गये। इनकी सुरक्षा हेतु जहाँ इनका संरक्षण तथा इनका प्रचार प्रसार किया गया कि यह किस प्रकार से महत्वपूर्ण है।

पाण्डुलिपि शब्द पाण्डु तथा लिपि दो शब्दो से मिलकर बना है पाण्डु का अर्थ है पीला या सफेद पाण्डुलिपि में किसी सतह को सफेदी से पॉट कर लिखने का भाव है |[3] लिपि शब्द संस्कृत के लिप् धातु से इ प्रत्यय लगाकर निष्पन्न होता है | पाणिनीय धातुपाठ में लिप् धातु का प्रयोग लेपन अर्थ में निर्दिष्ट किया गया है |[4]

लिप्तिः (लिप्+क्तिन्) लेपः (लिप् +घञ्) लेपनम् (लिप्+ल्युट्) लेपकः (लिप्+ण्बुल्) लेप्ता अथवा लेपयिता (लिप्+तृच्+णिच्) आदि।[5] इसके अतिरिक्त कर्मानुष्ठान के सन्दर्भ में **'**गोमयोपलेप**'** (गोबर से लीपना) तथा दीवार पोतने के सन्दर्भ में **'**सुधालेप**'** कहा जाता है। दोनों सामानार्थक है।[6] इस प्रकार लिप् धातु का तात्पर्य है अभिप्रायों की वणर्नात्मक

[2]संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा भारतीय अकादमी गोकुल सदन 36/101 गोपाल मन्दिर लेन वाराणसी- 221001, पृष्ठ संख्या 10

[4]शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ0 अभिराज राजेन्द्र मिश्रा डॉ0 (श्रीमती) राजेश कुमारी मिश्रा, द्वितीय संस्करण 2017 ई., प्रकाशक अक्षवट प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 77

[5]शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ0 अभिराज राजेन्द्र मिश्रा डॉ0 (श्रीमती) राजेश कुमारी मिश्रा, द्वितीय संस्करण 2017 ई., प्रकाशक अक्षवट प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 78

[6]शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ0 अभिराज राजेन्द्र मिश्रा डॉ0 (श्रीमती) राजेश कुमारी मिश्रा, द्वितीय संस्करण 2017 ई., प्रकाशक अक्षवट प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 78

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

अभिव्यक्ति। अतः पाण्डुलिपि (**Manuscript)** उस दस्तावेज को कहते हैं, जो एक व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों के द्वारा हस्तलेख से लिखी गयी है। जैसे- हस्तलिखित पत्र।[7] पाण्डुलिपि कागज, छाल, धातु, ताड़ के पत्ते अथवा किसी अन्य सामग्री पर कम-से-कम 75 वर्ष पहले हस्तलिखित संयोजक को कहते है। जिसका वैज्ञानिक ऐतिहासिक अथवा सौन्दर्यपरक महत्व हो | पाण्डुलिपियाँ सहस्त्र हैं, विभिन्न भाषाओं में लिपियों में पाई जाती हैं। पाण्डुलिपियों के महत्त्व को देखते हुए उनका संरक्षण तथा प्रचार प्रसार भारत से लेकर सम्पूर्ण विश्व में हो रहा है।भारत में अनेक स्थानों पर पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हो रही हैं। इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण स्थान ऋषि कश्यप नगरी कश्मीर है। प्राचीन समय में काशी तथा कश्मीर प्रमुख विद्या केन्द्र थे। वर्तमान समय में भी कश्मीर में अपार ज्ञानराशि पाण्डुलिपियों के रूप में वहाँ से प्राप्त हुई है। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

गिलगित पाण्डुलिपियाँ -

गिलगिट सम्प्रति पाक अधिकृत कश्मीर का मुजफ्फराबाद जनपद से प्राप्त हुई थी।[8] भुर्ज की छाल और मिट्टी से लिखित गिलगित पाण्डुलिपियाँ भारत में सबसे पुरानी जीवित पाण्डुलिपियाँ हैं। इन पाण्डुलिपियों में विहित और गैर विहित बौद्ध शामिल हैं, जो संस्कृत, चीनी, कोरिया, जापानी, मंगोलियाई, मांचू और तिब्बती धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य के विकास पर प्रकाश डालते है। गिलगित पाण्डुलिपि में बौद्ध कैनन सामाधिराजपुत्र और सन्दर्भ पुण्डरीकसूत्र (कमल सूत्र) सहित अन्य सूत्र शामिल हैं। जो धर्म, अनुष्ठान, दर्शन, प्रतीक, लोककथाओं, चिकित्सा सहित अन्य विषयों की एक विस्तृत श्रृँखला को शामिल करते है। इसके अलावा मानव जीवन और ज्ञान के कई अन्य क्षेत्र इसमें शामिल है। भौगोलिक रूप से इन पाण्डुलिपियों को 5वीं या 6वीं सदी में तैयार हुआ माना जा सकता है और इसकी भाषा बौद्ध अर्थात् पालि तथा संस्कृत का मिश्रित रूप है | यह पाण्डुलिपियाँ तीन किस्तों में खोजी गयी थी। इस पर पहला ग्रन्थ गिलगित मैनयुस्क्रिप्टस' कश्मीर के लिए डॉ0 नलिनाथ दत्ता ने प्रोफेसर डी0एम0 भट्टाचार्य तथा विद्यावारिधि शिवनाथ सिंह के सहयोग से 1931 ई. में सम्पादित किया गया। इन पाण्डुलिपियों का मुख्य भाग-भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली में स्थित है, शेष संग्रह श्री प्रताप सिंह संग्रहालय

[7]https//hi.m.wikipeda.org

[8]शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ0 अभिराज राजेन्द्र मिश्रा डॉ0 (श्रीमती) राजेश कुमारी मिश्रा, द्वितीय संस्करण 2017 ई., प्रकाशक अक्षवट प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 78

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कश्मीर में है।[9] भुर्ज वृक्ष की छाल पर लिखित ऋग्वेद पाण्डुलिपि कश्मीर में पाई गयी थी।[10] लगभग 150 वर्ष पहले ऋग्वेद के सबसे पहली बार छापने के लिए इसका उपयोग किया गया था। इसी पाण्डुलिपि को देखकर अंग्रेजी अनुवाद तैयार हुआ यह पाण्डुलिपि पुणे महाराष्ट्र के एक पुस्तकालय मे सुरक्षित है।[11]

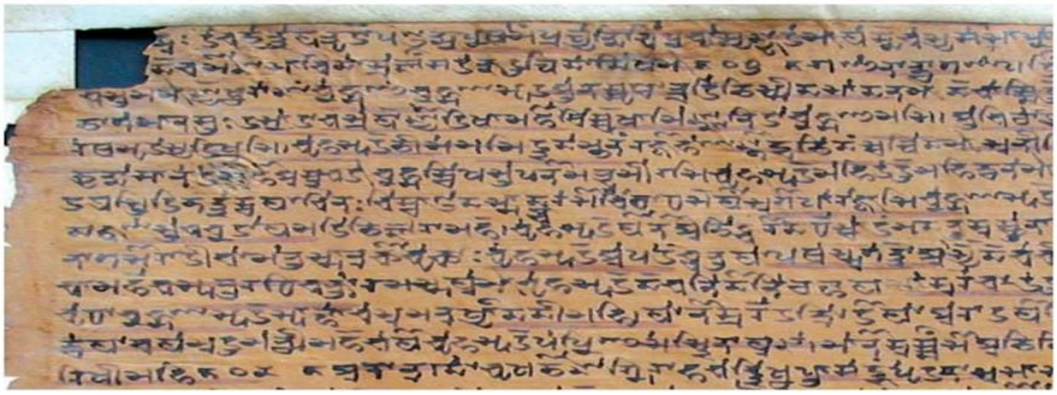

पाण्डुलिपि का चित्र[12]

कल्हण कृत 'राजतरङ्गिणी' प्राचीन कश्मीर का एक महानीय इतिहास ग्रन्थ है।[13] इसमें राजाओं के इतिहास प्राकृतिक सौन्दर्य, बौद्धधर्म के साथ-साथ, तत्कालीन चार महत्वपूर्ण कवियों के ख्याति प्राप्ति का वर्णन है।

''**मुक्ताकणः शिवस्वामी कविनन्दवर्धनाः।**

[9]पाण्डुलिपि विज्ञान, सम्पादिका- डॉ0 वेद कुमारी घई, प्रकाशक एवं वितरक विश्व संग्रह प्रतिष्ठान 173 रघुनाथ जम्मू, संस्करण 1980 ई.
[10]https//m.facebook.com
[11]https//m.facebook.com
[12]https//m.facebook.com

[13]संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, खण्डेलवाल प्रेस एण्ड पब्लिकेशन मन्दिर वाराणसी -221001, पृष्ठ संख्या 264

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

प्रथां रत्नाकरश्चागात्साम्राज्येन्विम' ।। (5/34)

मुक्ताकण, शिवस्वामिन, आनन्दवर्धन और रत्नाकर इन चार कवियों ने अवन्तिवर्मन के शासनकाल में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। शिवस्वामिन की रचना 'कप्फिनाभ्युदम' महाकाव्य। इस ग्रन्थ की तीन पाण्डुलिपियाँ पं0 गौरीशंकर जी को प्राप्त हुई जिनमें पहली पाण्डुलिपि गवर्नमेण्ट ओरियन्टल लाइब्रेरी, मद्रास में सुरक्षित है। यह ताड़पत्र पर उडियाँ में लिखी गई ।[14] इस पर माइक्रोफिल्म इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में उपलब्ध है। मद्रास से ही इस पाण्डुलिपि के दो प्रतिलेख देवनगरी में जिसे तेलगु प्रतिलेख के आधार पर तैयार किया गया है।

गौरीशंकर जी का प्रतिलेख है जो प्रो0 एफ0 डब्ल्यू- थामस के पास उपलब्ध है। तीसरा ताड़पत्र पर लिखी अपूर्ण पाण्डुलिपि काण्डमाण्डू (नेपाल) के राष्ट्रीय अभिलेखागार में उपलब्ध है।[15]

बख्शाली पाण्डुलिपि-

प्राचीन भारत की गणित से सम्बन्धित पाण्डुलिपि है। भोजपत्र पर लिखित यह सन् 1880 ई. में शारदा लिपि में एवं गाथा बोली में अपूर्ण 70 पन्नों की पाण्डुलिपि है। कोलकाता की एशियाटिक सोसायटी ने 'गणितावली' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन कराया।[16]

जम्मूदीप संग्रहणी सूत्र-

यह पाण्डुलिपि अज्ञात लेखक की प्राप्त हुई है। इसकी भाषा प्राकृत है | पृष्ठ 1 है। साइज 10X 5' प्रथम पृष्ठ नमिअजिणिंस्त्वन्नु .....। अन्तिम ..... श्री सूर्यपुटवंदिरे श्रीः ।।

इस सूत्र कृति में जम्बूदीप (कश्मीर) की भौगोलिक महत्त्व का निदर्शन हुआ है। पर्वतों, नदियों तथा वन सम्पदा का उल्लेख मिलता है। कृति को काली स्याही से पुराने कागज पर संवत् 1824 मास कृष्णपक्ष तृतीया, रविवार को लिपिबद्ध करके पूर्ण किया गया था।[17]

[14]National Mission for manuscripts अद्वैतवादिनी काल, पृष्ठ संख्या 16-19
[15]National Mission for manuscripts अद्वैतवादिनी काल, पृष्ठ संख्या 16-19
[16]https//hi.m.wikipeda.org
[17]बहुमूल्य संस्कृत पाण्डुलिपियाँ, अमीरूद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी कोश, पृष्ठ संख्या 143

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

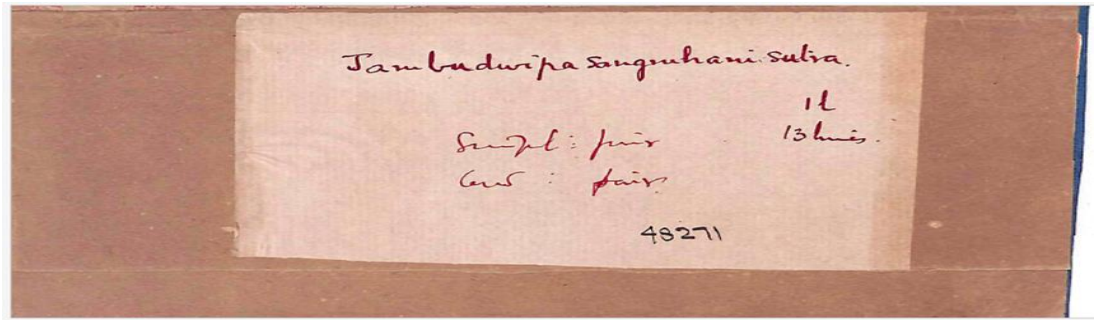

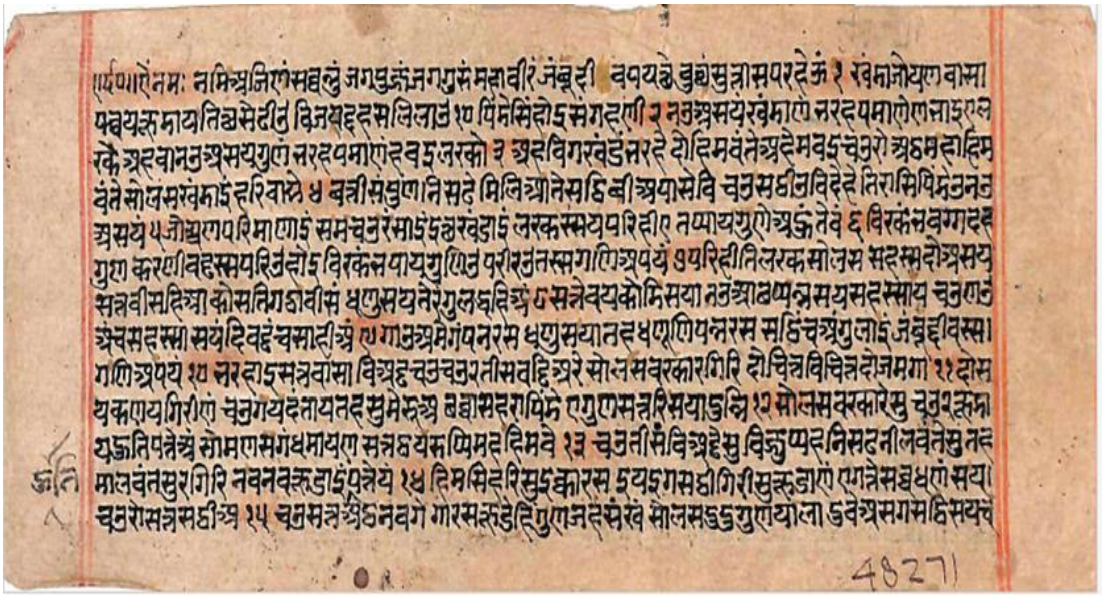

यह पाण्डुलिपि 'अमीरूद्दौला', पब्लिक लाइब्रेरी कैसरबाग लखनऊ में संग्रहीत है। इसके अतिरिक्त कल्हण की 'राजतङ्गिणी' की पाण्डुलिपि का अंग्रेजी अनुवाद डॉ0 स्टीन द्वारा लिखित भी प्राप्त होता है। परन्तु इसका अत्यन्त स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है।[18]

उपसंहार- पाण्डुलिपि पढ़ना भी कला है। यह साहित्य के निष्कर्ष युगानुरूप परिष्कृत और व्याख्यानुसार परिवर्तित होते है। ज्ञान नव नवानुभवों के कारण विस्मृत या व्याख्यायित होता है | ज्ञान विज्ञान की यह अक्षय्य परम्परा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक | एक समुदाय से दूसरे समुदाय तक तथा एक राज्य से दूसरे राज्य तक होते हुए एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक होते हुए सम्पूर्ण विश्व में बढती जाती है |लेकिन इसे सुरक्षित रखना एवं इसका प्रचार-प्रसार होते रहना भी जरुरी है | अन्यथा इसके अभाव में यह विलुप्त हो जाएगा | इस ज्ञान परम्परा का अपार भण्डार भारत में किसी- न-किसी रूप में प्राप्त हो रहा है और

[18] कश्मीर का विस्मृति इतिहासकार ओरलस्टीन संपादकीय पृष्ठ, इकबाल अहमद 13 सितम्बर 2022 ई.

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

इसके संरक्षण एवं उसके ज्ञान विज्ञान कला इत्यादि के प्रचार हेतु कार्य हो रहे हैं | इस परम्परा में कश्मीर भी पीछे नहीं है | कश्मीर अपने सौन्दर्य के साथ-साथ प्राचीनकाल से ही संस्कृत भाषा और साहित्य की प्रमुख क्रीड़ास्थली रहा है काव्य, काव्यशास्त्र, दर्शन, आयुर्वेद, इतिहास आदि अनेक विधियों में निपुण विद्वानों की जन्म एवं कर्मस्थली रहा है। कश्मीर राज्य की विविध पाण्डुलिपियों का साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण अवदान रहा है।

सन्दर्भ –ग्रन्थ-सूची

1.पाण्डुलिपि विज्ञान, सम्पादिका- डॉ0 वेद कुमारी घई, प्रकाशक एवं वितरक विश्व संग्रह प्रतिष्ठान 173 रघुनाथ जम्मू, संस्करण 1980 ई.
2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा भारतीय अकादमी गोकुल सदन 36/101 गोपाल मन्दिर लेन वाराणसी- 221001
3.शोध प्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ0 अभिराज राजेन्द्र मिश्रा डॉ0 (श्रीमती) राजेश कुमारी मिश्राप्रकाशक अक्षवट प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2017 ई.,
4.https//hi.m.wikipeda.org
5.पाण्डुलिपि विज्ञान, सम्पादिका- डॉ0 वेद कुमारी घई, प्रकाशक एवं वितरक विश्व संग्रह प्रतिष्ठान 173 रघुनाथ जम्मू, संस्करण 1980 ई.
6.https//m.facebook.com
7.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, खण्डेलवाल प्रेस एण्ड पब्लिकेशन मन्दिर वाराणसी -221001
8.National Mission for manuscripts
9.https//hi.m.wikipeda.org
10.बहुमूल्य संस्कृत पाण्डुलिपियाँ, अमीरूद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी कोश, पृष्ठ संख्या 143
11.कश्मीर का विस्मृति इतिहासकार ओरलस्टीन संपादकीय पृष्ठ, इकबाल अहमद 13 सितम्बर 2022 ई.
llenges." 2018, 6, no. 2, pp. 9–12.

Received Date: 14.09.2023
Publication Date: 30.09.2023